हर मर्ज का एक इलाज

आशोक मानव

प्रकृति के जीव प्राणी में सबसे अधिक मानव जीवन रोग से ग्रसित है। जिसे **जानवर** कहा जाता है, उनके जीवन में कुछ गिनती के रोग हैं, वो भी पालतू जानवरों में ज्यादा पाया जाता है। जानवर स्वाभाविक जीवन जीते हैं, किसी का बुरा नहीं सोचते हैं। इसके लिए रोग पैदा करने वाला प्रदूषण उनके शरीर को नहीं प्रभावित कर पाता है। पालतू जानवरों में कुछ रोग पाया जाता है, वो भी इसलिए क्योंकि पालतू जानवर अपने मालिक के ऊपर आने वाली विपत्ति को रोकते हैं जिसके कारण उनका जीवन प्रभावित होता है। प्रकृति में मानव जीवन को ही सबसे अधिक बीमारियां क्यों हो रही हैं? जबकि मानव जीवन सबसे अधिक विवेकमान है, अध्यात्म में विश्वास रखता है, हर वस्तु का सेवन जानकारी के बाद करता है, डॉ. की भी सलाह लेता है। ज्ञानी होने के कारण हर कार्य विचार करके करता है। इसके बाद भी किसी न किसी बीमारी से प्रभावित रहता है। मानव जीवन की बीमारी का सबसे बड़ा कारण भावनात्मक प्रदूषण है। ज्यादातर लोग अपने बारे में कम, अपने विरोधी के बारे में ज्यादा सोचते हैं। यह सोच अच्छी नहीं होती है। व्यक्ति अपना कीमती समय ज्यादातर नकारात्मक सोच में खर्च कर देता है। व्यक्ति का धन उसका विचार होता है। वह जैसा सोचता रहता है उस तरह की ऊर्जा गंध के रूप में निकल जाती है जो प्रकृति में कार्य करती है। जिस तरह की ऊर्जा होती है उस तरह के संबंधित व्यक्ति के अंदर श्वसन क्रिया के माध्यम से अंदर जाती है और अपने गुणों से संबंधित जीवाणु पैदा करती है जो बीमारी का कारण बन जाता है। ऐसा होने से रोग प्रतिरोधी क्षमता कम होने लगती है और सबसे कमजोर प्रभावित होकर बीमार पड़ जाता है। इसका प्रभाव सोचने वाले व्यक्ति पर प्रत्यक्ष पड़ता है। जब व्यक्ति सोचता है तब खाये हुए पदार्थ का रासायनिक परिवर्तन होता है और उसी तरह के पदार्थ का निर्माण शरीर में होने लगता है।

जिस तरह के पदार्थ से शरीर का निर्माण होता है, उसी तरह के गुण की ऊर्जा शरीर से निकलने लगती है जो प्रकृति में प्रदूषण फैलाती है जो कि रोग का कारण बनती है। व्यक्ति के अंदर श्वसन क्रिया के माध्यम से नकारात्मक ऊर्जा आती है। इसके आने से रोग प्रतिरोधी क्षमता कम होने लगती है परिणामस्वरूप रोग पैदा करने वाले जीवाणु पैदा होने लगते हैं। ऐसा होने से व्यक्ति स्वयं बीमार पड़ जाता है। यही मानव बीमारी का सबसे बड़ा कारण है।

भावनात्मक प्रदूषण बीमारी का मुख्य कारण होता है पर इसके अतिरिक्त कुछ और भी कारण होते हैं। इसके द्वारा छोड़े गए भाव भी व्यक्ति के ऊपर क्रियाशील होते हैं। विरोधी द्वारा छोड़ा गया हानिकारक भाव भी बीमारी का कारण बन जाता है। वर्तमान समय में नकली सामान का सेवन करने से भी बीमारियां पैदा हो रही हैं। अनाज पैदा करने के लिए रासायनिक पदार्थ का प्रयोग किया जा रहा है। ऐसा अनाज प्रयोग करने से शरीर को नुकसान पहुंचता है जिससे शरीर की रोग प्रतिरोधी क्षमता कम होने लगती है। हानिकारक जीवाणु सक्रिय होकर बीमारी पैदा कर देते हैं। उपरोक्त कारणों के अतिरिक्त कुछ अन्य कारण भी जाने–अनजाने में बीमारी का कारण बन जाते हैं। इच्छाशक्ति कमजोर पड़ने पर यह ज्यादा प्रभावकारी हो जाते हैं।

समस्त बीमारियां हानिकारक ऊर्जा के प्रभावी होने से पैदा होती हैं। इसलिए शरीर से सकारात्मक ऊर्जा पैदा करके हर बीमारी से बचा जा सकता है। व्यक्ति जैसा सोचता है उस तरह की ऊर्जा शरीर से निकल जाती है जो गुणात्मक बन जाती है और समय आने पर अपने गुण का फैलाव शरीर के साथ प्रकृति में करती है। **व्यक्ति जिस तरह का विचार रखते हुए सांस लेता है उसी गुण की ऊर्जा ऑक्सीजन के रूप में शरीर के अंदर आती है और शरीर में रासायनिक परिवर्तन करके उसी तरह के जीवाणु पैदा करती है।**

श्वसन क्रिया के माध्यम से जो गुणात्मक ऊर्जा आती है वो इन्हीं लाइनों से गुजरकर वापस जाती है। आने और वापस जाने में एक रासायनिक क्रिया होती है जो पूरे